पाठ 4

सुदामा चरित

सवैये

सुदामा–''द्वारिका जाहुजू, द्वारिका जाहुजू, आठहुँ याम यही जक तेरे।
जो न कह्यो करिये तो बड़ो दुःख, जायें कहाँ अपनी गति हेरे।
द्वार खड़े छड़िया प्रभु के, जहाँ भूपति जान न पावत मेरे।
पाँच सुपारि विचारु तू देखिके, भेंट को चारि न चाउर मेरे।1।''

द्वारपाल– ''सीस पगा न झगा तन पै प्रभु,
जाने को आहि, बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी–सी लटी दुपटी अरु,
पाँव उपानहुँ की नहीं सामा।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक,
रह्यो चकि सो वसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयाल को धाम,
बतावत आपनो नाम सुदामा।2।''

कैसे बिहाल, बिवाइन सौं भये, कंटक जाल गड़े पग जोये।
हाय महा दुःख पायो सखा तुम, आये इतै न कितै दिन खोये।
देखि सुदामा की दीन दसा, करुणा करिके करुणानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सौं पग धोये।3।

नरोत्तम दास

शब्दार्थ

जाहुजू	–	जाइए	पगा	–	पगड़ी
याम	–	प्रहर	झगा	–	कपड़ा (ढीला कुरता)
छड़िया	–	पहरेदार	आहि	–	आए हैं
भूपति	–	राजा	बिहाल	–	बेहाल
अभिरामा	–	सुंदर	दुपटी	–	अंगोछा, गमछा
सखा	–	मित्र	उपानहु	–	जूता
करुणा	–	दया	द्विज	–	ब्राह्मण
छुयो	–	छुआ	वसुधा	–	पृथ्वी
सौं	–	से			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. सुदामा के मित्र कौन थे?
2. किसके कहने पर सुदामा द्वारिका गए थे?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. पाठ में 'वसुधा' शब्द आया है–

   (क) श्रीकृष्ण के लिए (ख) पृथ्वी के लिए

   (ग) सुदामा की पत्नी के लिए (घ) अंगोछा के लिए ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. श्रीकृष्ण कहाँ के राजा थे?
2. सुदामा श्रीकृष्ण के लिए भेंट स्वरूप क्या ले गए थे?
3. द्वारपाल ने सुदामा का चित्रण किसके सामने किया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. द्वारपाल ने सुदामा के आगमन की सूचना किसको तथा क्या दी?
2. श्रीकृष्ण ने सुदामा के पाँव कैसे धोए? उक्त क्रिया वाली पंक्तियाँ सवैया में से छाँटकर लिखिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखत पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

   "पाँच सुपारि विचारु तू देखिके,

   भेंट को चारि न चाउर मेरे।।
2. सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या स्थिति हुई? लिखिए।
3. श्रीकृष्ण–सुदामा के मिलन का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता और क्रिया पदों को छाँटकर लिखिए–

(क) सुदामा कृष्ण से मिलने जा रहे थे।

(ख) सुदामा अपने साथ चावल की पोटली लेकर गए।

(ग) सेवक ने सुदामा के बारे में कृष्ण को बताया।

(घ) कृष्ण सुदामा का नाम सुनकर दौड़े आए।

2. दिए गए वाक्यों में क्रिया सकर्मक है या अकर्मक। वाक्यों को अपनी कॉपी में लिखकर क्रिया का भेद लिखिए।

   1. द्वारपाल बोला।

2. कृष्ण ने चावल खाए।
3. कृष्ण ने सुदामा के पैर धोए।

पाठ से आगे

1. सुदामा कृष्ण से मिलने बहुत पहले भी जा सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कारण जानिए और लिखिए।
2. जे गरीब पर हित करे, ते रहीम बड़ लोग।
   कहाँ सुदामा बापुरौ, कृष्ण मितायी जोग।।
   उपर्युक्त दोहे का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
3. आपने कभी अपने मित्र की मदद की होगी, उस घटना का वर्णन कीजिए।

संकलन

श्रीकृष्ण–सुदामा मित्रता की कहानी है। ऐसी कहानियों का संकलन कीजिए।

यह भी करें–

निम्नलिखित संवाद को आगे बढ़ाइए–

द्वारपाल – महाराज की जय हो। महाराज द्वार पर एक ब्राह्मण खड़ा है। आप से मिलना चाहता है।

श्रीकृष्ण – मुझसे मिलना चाहता है मगर क्यों? क्या नाम है उसका और कहाँ से आया है?

द्वारपाल –

श्रीकृष्ण –

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

द्वारिका, कह्यो, द्विज, द्वार, रह्यो

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

"शील दरिद्रता का, बुद्धि अज्ञान का और भक्ति भय का नाश करती है।"

हम पृथ्वी की संतान

प्रकृति एक विशाल पारिस्थितिकी तंत्र है जिसमें दो प्रकार के प्रमुख घटक शामिल हैं—जैविक और अजैविक। जैवमंडल का निर्माण भूमि, गगन, अनिल (वायु), अनल (अग्नि), जल नामक पंचतत्वों से होता है जिसमें हम छोटे—बड़े एवं जैव—अजैव विविधताओं के बीच रहते आए हैं। इसमें पेड़, पौधों एवं प्राणियों का निश्चित सामंजस्य और सहअस्तित्व है, जिसे समन्वयात्मक रूप में पर्यावरण के विभिन्न अवयव कहते हैं। पर्यावरण शब्द 'परि' और 'आवरण' इन दो शब्दों के योग से बना है। 'परि' और 'आवरण' का सम्यक अर्थ है—वह आवरण जो हमें चारों ओर से ढके हुए है, आवृत किए हुए है।

प्रकृति और मानव के बीच का मधुर सामंजस्य बढ़ती जनसंख्या एवं उपभोगी प्रवृत्ति के कारण घोर संकट में है। यह असंतुलन प्रकृति के विरुद्ध तीसरे विश्वयुद्ध के समान है। विश्वभर में वनों का विनाश, अवैध एवं असंगत उत्खनन, कोयला, पेट्रोल, डीजल के उपयोग में अप्रत्याशित अभिवृद्धि और कल—कारखानों के विकास के नाम पर विस्तार ने मानव सभ्यता को महाविनाश के कगार पर ला खड़ा कर दिया है। विश्व की प्रसिद्ध नदियाँ, जैसे—गंगा, यमुना, नर्मदा, राइन, सीन, मास, टेम्स आदि भयानक रूप से प्रदूषित हो चुकी हैं। इनके निकट बसे लोगों का जीवन दूभर हो गया है।

पृथ्वी के ऊपर वायुमण्डल के स्ट्रटोस्फियर में ओजोन गैस की एक मोटी परत है। यह धरती के जीवन की रक्षा कवच है जिससे सूर्य से आने वाली हानिकारक किरणें रोक ली जाती हैं। किंतु पृथ्वी के ऊपर जहरीली गैसों के बादल बढ़ते जाने के कारण सूर्य की अनावश्यक किरणें बाह्य अंतरिक्ष में परावर्तित नहीं हो पातीं जिसके कारण पृथ्वी का तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) बढ़ता जा रहा है। इससे छोटे—बड़े सभी द्वीपसमूहों एवं महाद्वीपों के तटीय क्षेत्रों के डूब जाने का खतरा बढ़ गया है। इसे 'ग्रीन हाउस प्रभाव' कहते हैं। यही स्थिति रही तो मुंबई जैसे महानगर प्रलय की गोद में समा सकते हैं। पृथ्वी पर बढ़ते तापमान के कारण विश्व सभ्यता को अमृत एवं पोषक जल प्रदान करने वाले ग्लेशियर या तो लुप्त हो गए हैं या लुप्त होने की

ओर बढ़ते जा रहे हैं। अमृतवाहिनी गंगा अपने उद्‌गम गंगोत्री के मूल स्थान से कई किलोमीटर पीछे खिसक चुकी है।

प्राकृतिक आपदाओं में बढ़ोतरी के कारण लाखों लोग शरणार्थी बन चुके हैं। विशेषकर अपने भारत में ही बाँधों, कारखानों, हाइड्रोपॉवर स्टेशनों के बनने के कारण लाखों वनवासी भाई–बहन बेघर होकर शरणार्थी बने हैं।

पर्यावरण के प्रति गहरी संवेदनशीलता प्राचीन काल से ही मिलती है। अथर्ववेद में लिखा है–'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात् भूमि माता है, हम पृथ्वी के पुत्र हैं। एक जगह यह भी विनय किया गया है कि 'हे पवित्र करने वाली भूमि! हम कोई ऐसा काज न करें जिससे तेरे हृदय को आघात पहुँचे।' हृदय को आघात पहुँचाने का अर्थ है पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्रों अर्थात् पर्यावरण के साथ क्रूर छेड़छाड़ करना। हमें प्राकृतिक संसाधनों के अप्राकृतिक एवं बेतहाशा दोहन से बचना होगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व के तमाम राष्ट्र जलवायु परिवर्तन के गंभीर खतरे को लेकर आपसी मतभेद भुला दें और अपनी–अपनी ज़िम्मेदारी ईमानदारीपूर्वक निभाएँ, ताकि समय रहते सर्वनाश से उबरा जा सके। विश्वविनाश से निपटने के लिए सामूहिक एवं व्यक्तिगत प्रयासों की जरूरत है। इस दिशा में अनेक आंदोलन हो रहे हैं। अरण्य रोदन के बदले अरण्य संरक्षण की बात हो रही है। सचमुच हमें आत्मरक्षा के लिए पृथ्वी की रक्षा करनी होगी, 'भूमि माता है और हम उसकी संतान' इस कथन को चरितार्थ करना होगा।

प्रभु नारायण